संप्रत्यय संप्राप्ति प्रतिमान द्वारा संस्कृत व्याकरण शिक्षण

अरुणिमा*

ज्ञान का विकास करना मनुष्य की मूल प्रवृत्ति है। शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक तकनीकी साधनों के प्रयोग ने शिक्षा को आसान कर दिया है। शैक्षिक प्रौद्योगिकी ने शिक्षा में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन कर नवीन स्वरूप प्रदान किया है। शिक्षण प्रतिमान भी इनमें से एक है। विद्यार्थियों में संप्रत्ययों की समझ हेतु मनोवैज्ञानिकों ने अलग-अलग शिक्षण प्रतिमानों का निर्माण किया है। शिक्षण प्रतिमान, शिक्षण सिद्धांत विकसित करने की ओर एक कदम है। ये स्वयं सिद्ध कल्पनाएँ होती हैं, जिनका प्रयोग शिक्षक अपने शिक्षण और अधिगम को प्रभावशाली बनाने के लिए करता है। संप्रत्यय संप्राप्ति प्रतिमान (Concept Attainment Model) का उपयोग कर शिक्षक, विद्यार्थियों को संप्रत्ययों (Concepts) की प्रकृति की सही जानकारी प्रदान करता है। इस प्रतिमान का उपयोग नवीन संप्रत्ययों के स्पष्टीकरण तथा व्याख्या करने में किया जाता है। इस प्रतिमान का प्रयोग संस्कृत व्याकरण शिक्षण में भी किया जा सकता है। इस प्रतिमान के माध्यम से संस्कृत व्याकरण के संप्रत्ययों को अधिक रुचिकर एवं सरल तरीके से विद्यार्थियों को समझाया जा सकता है। अतः इस लेख में संप्रत्यय संप्राप्ति प्रतिमान द्वारा संस्कृत व्याकरण के कुछ संप्रत्ययों को पढ़ाने की क्रमबद्ध प्रक्रिया प्रस्तुत की गई है।

'वि+आ' उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु से 'ल्युट् च्' सूत्र से ल्युट् प्रत्यय होने पर ल्युट् के 'यु' को 'युवोरनाकौ' सूत्र से अनादेश हुआ, तब नत्व को णत्वादेश होने पर 'व्याकरण' शब्द निष्पन्न हुआ। व्याकरण शब्द का अर्थ है, "व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यनते शब्दाः येन तत् इति व्याकरणम्" (भन्साली, 2008) अर्थात् जिसकी सहायता से विभिन्न शब्दों का निर्माण किया जाता है, उसे व्याकरण कहा जाता है।

व्याकरणशास्त्र का विस्तृत एवं सूक्ष्म अध्ययन संस्कृत भाषा में अति प्राचीन काल से ही हो रहा है। वैदिक युग से ही शब्द मीमांसा के विषय में भारतीय मनीषियों की अनेक व्याख्याएँ प्राप्त हैं। व्याकरण को साङ्गवेद का मुख बताया गया है—

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽयं पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षु: निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ।।
शिक्षा घ्राणन्तु वेदस्य, मुखं व्याकरण स्मृतम् ।
तस्मात्साङ्गमधीत्यैव, ब्रह्मलोके महीयते ।।

व्याकरणशास्त्र पदों की प्रकृति तथा संप्रत्यय आदि का उपदेश देकर पद के स्वरूप का परिचय कराता है और उसके अर्थ का भी निश्चय कराता है। फलतः पदस्वरूप और पदार्थ निश्चय के निमित्त व्याकरण का उपयोग होने से व्याकरण वेद रूपी पुरुष

* *शोधार्थी*, शिक्षा संकाय, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नयी दिल्ली – 110 016

का 'मुख' माना गया है। छह वेदांगों में व्याकरण वेदाङ्ग ही अन्य सभी वेदांगों को पुष्ट करता है। जिस प्रकार मुख के बिना अर्थात् भोजन आदि को ग्रहण न करने से शरीर की पुष्टि असंभव है, उसी प्रकार वेद रूपी पुरुष के शरीर की रक्षा और स्थिति व्याकरण के बिना असंभव है। अतः संस्कृत के वैदिक और वैदिकोत्तर ग्रंथों के सुचारु ज्ञान के लिए व्याकरण का अत्यधिक महत्व है।

आज के युग में मानव जीवन का प्रत्येक पक्ष वैज्ञानिक खोजों तथा आविष्कारों से प्रभावित है। मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों में ज्ञान का विकास करना है। मनुष्य ने प्रत्येक क्षेत्र में विकास किया है। आज प्रत्येक क्षेत्र कृषि, उद्योग, स्वास्थ्य आदि विज्ञान से सकारात्मक रूप से प्रभावित है। शिक्षा का क्षेत्र भी इसके प्रभाव से मुक्त नहीं रह सका है। रेडियो, टेपरिकॉर्डर, टेलीविज़न, रेडियो-विज़न, कंप्यूटर आदि का बढ़ता हुआ उपयोग शिक्षा को तकनीकी के निकट लाता जा रहा है। शिक्षाशास्त्र का ऐसा कोई भी अंग नहीं है, चाहे वह विधियों-प्रविधियों का हो, उद्देश्यों का हो अथवा शिक्षण प्रक्रिया का हो, चाहे शोध का हो, जो तकनीकी से प्रभावित न हुआ हो। विद्यार्थी-शिक्षकों को चाहे सैद्धांतिक ज्ञान से संबंधित समस्या हो, चाहे उनके प्रयोगात्मक शिक्षण के क्षेत्र की समस्या हो, तकनीकी उसमें सहायता देती है। सत्य तो यह है कि तकनीकी विज्ञान इतना समृद्ध और शक्तिशाली होता जा रहा है कि बिना इसका अध्ययन किए, अध्यापकों का शिक्षण संबंधी ज्ञान या उनके परीक्षण तथा प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान और कौशल अधूरे समझे जाते हैं। शैक्षिक तकनीकी ने शिक्षा के क्षेत्र में पुरानी अवधारणाओं में आधुनिक संदर्भ के साथ अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन कर उन्हें एक नवीन स्वरूप प्रदान किया है।

शिक्षण-प्रतिमान — अर्थ एवं परिभाषाएँ

एक समय था, जब शिक्षा के क्षेत्र में सीखने के सिद्धांतों (Learning Theories) को अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता था। धीरे-धीरे अनुभव तथा शोध के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि कक्षा शिक्षण की समस्याओं तथा शैक्षिक वातावरण की समस्याओं के समाधान में सीखने (अधिगम) के सिद्धांत असफल रहे हैं। अतः अब शिक्षाशास्त्री तथा मनोवैज्ञानिक तकनीकी के सिद्धांतों का प्रयोग करते हुए शिक्षण की प्रकृति को समझने का प्रयास कर रहे हैं। फलस्वरूप शिक्षण के सिद्धांतों का विकास हो रहा है, लेकिन अभी तक किसी भी शिक्षण सिद्धांत का प्रतिपादन नहीं हो रहा है। शिक्षण-प्रतिमान तथा शिक्षण-प्रारूप को शिक्षण सिद्धांतों आदि का रूप माना जाता है। इस क्षेत्र में क्रोनबैक (Cronback), गेने (Gagne) आदि का नाम उल्लेखनीय है।

पूर्व सिद्धांतों के आधार पर ही नए सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जाता है। शिक्षण तथा अधिगम एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। जहाँ शिक्षण होता है, वहाँ अधिगम होना आवश्यक है, परंतु सीखने के लिए शिक्षण आवश्यक नहीं है। बिना शिक्षण के भी अधिगम होता है। क्रोनबैक (Cronback) का कथन है कि शिक्षण सिद्धांतों का प्रतिपादन अधिगम के सिद्धांतों की सहायता से किया जा सकता है। इस प्रकार शिक्षण सिद्धांतों का आधार अधिगम के सिद्धांत माने जाते हैं, इसके अतिरिक्त गेने (Gagne) का भी विचार है कि, "शिक्षण का मूल आधार अधिगम के प्रकार हैं।" (चौधरी और गुप्ता, 2010)

प्रतिमान की परिभाषा करते हुए भटनागर तथा भटनागर ने लिखा है, "शिक्षण या अधिगम या शिक्षण-अधिगम के सिद्धान्तों का किसी व्यवहार को प्राप्त करने के लिए किसी प्रारूप के अनुसार दी जाने वाली क्रिया प्रतिमान कहलाती है।"

शिक्षण-प्रतिमान, शिक्षण सिद्धांत विकसित करने की ओर एक कदम है। ये शिक्षण सिद्धांतों को वैज्ञानिक आधार प्रदान करते हैं। ये स्वयं सिद्ध कल्पनाएँ होती हैं जिनका प्रयोग शिक्षक अपने शिक्षण और अधिगम को प्रभावशाली बनाने के लिए करता है।

एच. सी. वील्ड के अनुसार, "प्रतिमान, किसी आदर्श के अनुरूप व्यवहार को ढालने की प्रक्रिया को कहा जाता है।" शिक्षण-प्रतिमान, शिक्षण सिद्धांत विकसित करने की ओर पहला कदम है। यह शिक्षण सिद्धांतों को वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। ये स्वयं सिद्ध कल्पनाएँ होती हैं, जिनका प्रयोग शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए करता है। हायमन (Hyman) के अनुसार, "शिक्षण प्रतिमान शिक्षण के बारे में सोचने-विचारने की एक रीति है, जो वस्तु के अंतर्निहित गुणों को परखने के लिए आधार प्रदान करती है। प्रतिमान किसी वस्तु को विभाजित तथा व्यवस्थित करके तार्किक रूप में प्रस्तुत करने की विधि है।"

बी. आर. जॉयस ने शिक्षण प्रतिमानों को अनुदेशन प्रारूप (Instructional Designs) कहा है — 'शिक्षण प्रतिमानों में विशेष उद्देश्य प्राप्ति के लिए परिस्थिति का उल्लेख किया जाता है जिसमें विद्यार्थी व शिक्षक मिलकर इस प्रकार कार्य करते हैं कि उनके व्यवहारों में परिवर्तन लाया जा सके।' (कुलश्रेष्ठ, 2002)

शिक्षण-प्रतिमान अनुदेशनात्मक नमूने हैं जो शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त करने तथा शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली एवं रोचक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षण प्रतिमान का विशेष महत्व है —

- शिक्षण प्रक्रिया के तीनों पक्षों — पूर्व शिक्षण अवस्था, अंतर्शिक्षण अवस्था, शिक्षण-उत्तर अवस्था से संबंधित तीनों कार्यों — आयोजन, क्रियान्वयन व मूल्यांकन में शिक्षण-प्रतिमान उचित दिशा-निर्देश प्रदान करते हैं।
- शिक्षण-प्रतिमान कक्षा-कक्ष का उचित शैक्षिक वातावरण बनाने में सहायक होते हैं जिससे ये कार्य सफलतापूर्वक संपन्न किए जा सकें।
- शिक्षण-प्रतिमान पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की सफलतापूर्वक प्राप्ति में बहुत सहायक होते हैं।

शिक्षण-प्रतिमान का महत्व

सीखने में शिक्षण-प्रतिमानों का निम्नलिखित महत्व है —

- प्रत्येक प्रतिमान कुछ विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होता है।
- इसका स्वरूप व्यावहारिक होता है और यह सीखने की उपलब्धि संभव करता है।
- यह अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन के लिए उपयुक्त उद्दीपक परिस्थितियों के चयन में सहायक है।
- प्रतिमान में अनेक विधियों, प्रविधियों तथा युक्तियों का प्रयोग किया जाता है।
- यह मूल्यांकन की एक विशिष्ट कसौटी प्रस्तुत करता है और व्यवहार का मूल्यांकन करता है।
- प्रतिमान के द्वारा शिक्षण में सुधार तथा परिवर्तन लाया जाता है।

- शिक्षक के शिक्षण को प्रभावात्मक बनाने के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है।

शिक्षण-प्रतिमान के तत्व

सिखाने हेतु शिक्षण-प्रतिमानों के चार मौलिक तत्व होते हैं —

1. **उद्देश्य (Focus)** — प्रत्येक शिक्षण-प्रतिमान का कोई उद्देश्य अवश्य होता है, जिसे उसका लक्ष्य बिंदु कहते हैं। इसी लक्ष्य बिंदु को ध्यान में रखकर प्रतिमान को विकसित किया जाता है। दूसरे शब्दों में, शिक्षण-प्रतिमान का उद्देश्य उस बिंदु को कहते हैं जिसके लिए प्रतिमान का विकास किया जाता है।
2. **संरचना (Syntax)** — संरचना से अभिप्राय शिक्षण-प्रतिमानों के उन बिंदुओं से है, जो शिक्षण को विभिन्न अवस्थाओं में निर्धारित लक्ष्यों या उद्देश्यों के अनुसार केंद्रित क्रियाएँ उत्पन्न करते हैं। शिक्षण-प्रतिमान की संरचना से यह पता चलता है की शिक्षण की क्रियाओं, नीतियों, युक्तियों तथा अंत: क्रियाओं को किस प्रकार से क्रमबद्ध किया जाना चाहिए, ताकि वांछित उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके। यह विषय-वस्तु के प्रस्तुतिकरण से संबंधित है।
3. **सामाजिक प्रणाली (Social System)** — प्रत्येक प्रतिमान की अपनी एक सामाजिक प्रणाली होती है जो हमें यह बताती है कि विद्यार्थी और शिक्षकों के मध्य क्रिया तथा अंतः क्रिया का आयोजन किस प्रकार से किया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों के व्यवहार पर नियंत्रण रखा जा सके। साथ ही उनमें वांछित परिवर्तन भी लाया जा सके। सामाजिक प्रणाली हमें अभिप्रेरणा देने वाली प्रविधियों के बारे में भी बताती है। प्रत्येक प्रतिमान यह मानकर चलता है कि प्रत्येक कक्षा एक समाज है और उस समाज के नियंत्रण तथा सुधार के लिए कोई-न-कोई निश्चित प्रकार की सामाजिक प्रणाली अवश्य अपनानी चाहिए, जिससे शिक्षण व्यवस्था सुचारु रूप से चलती रहे।
4. **सहायक प्रणाली (Support System)** — सहायक प्रणाली का संबंध उन सुविधाओं के साथ है जिनके माध्यम से शिक्षक तथा विद्यार्थी शिक्षण को पूर्णता की ओर ले जाते हैं। एक प्रकार से यह मूल्यांकन करता है कि कहाँ तक शिक्षण व्यूह-रचनाएँ तथा युक्तियाँ सफल रही हैं।

संस्कृत व्याकरण शिक्षण में संप्रत्यय संप्राप्ति प्रतिमान की भूमिका

भाषा वह शक्ति है जिसके माध्यम से हम अपने विचारों से दूसरों को अवगत कराते हैं तथा दूसरों के विचारों को समझते हैं। इस प्रक्रिया में मनुष्य चार क्रियाएँ करता है — श्रवण, कथन, पठन और लेखन। इनमें से श्रवण व पठन अवबोध कौशल के अंतर्गत आते हैं और कथन व लेखन अभिव्यक्ति कौशल के अंतर्गत आते हैं।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में संस्कृत का शिक्षण प्रायः एक प्राचीन, सांस्कृतिक, शास्त्रीय एवं श्रेष्ठ भाषा के रूप में किया जा रहा है। इसका संपूर्ण पाठ्यक्रम तथा शिक्षाविधि का निर्धारण इसी आधार पर हुआ है। संस्कृत शिक्षण के लिए सामान्यतः दो विशिष्ट प्रणालियों का प्रयोग किया जाता है। एक व्याकरण प्रणाली तथा दूसरी व्याकरण अनुवाद प्रणाली। प्रथम प्रणाली का प्रयोग संस्कृत पाठशालाओं में किया जाता है तथा दूसरी प्रणाली का प्रयोग संस्कृत शिक्षा संस्थानों में किया जाता है।

शिक्षा की आज की आवश्यकता है कि इसकी प्रक्रियाओं को प्रभावशाली एवं दक्ष बनाया जाए। दक्षता का अर्थ होता है — शिक्षा प्रक्रिया प्रभावशाली होने के साथ समय, धन एवं ऊर्जा की दृष्टि से मितव्ययी हो। आधुनिक युग तकनीकी विकास एवं क्रांति का युग है। प्रतिदिन नई-नई तकनीकियों तथा माध्यमों का विकास किया जा रहा है। माध्यमों के विकास ने विश्व की भौतिक दूरी को कम कर दिया है अथवा विश्व को बहुत छोटा कर दिया है। इसमें वृहद् तकनीकी प्रवृत्तियों का विशेष योगदान है।

शैक्षिक नूतन प्रविधि का शिक्षा के क्षेत्र में नूतन सहयोग है। भाषा शिक्षण प्रक्रिया में भी विशेष योगदान दृष्टिगोचर है। संस्कृत भाषा शिक्षण में भी शैक्षिक प्रविधि का प्रभाव दिखाई देता है। शिक्षक, संस्कृत शिक्षण प्रक्रिया में पद्य, गद्य, नाटक, व्याकरण को सरलतापूर्वक पढ़ा सकते हैं। शिक्षण प्रतिमानों द्वारा संस्कृत भाषा के संप्रत्ययों को रुचिपूर्वक एवं सरलतापूर्वक विद्यार्थियों में विकसित किया जा सकता है। संस्कृत शिक्षण में शिक्षण प्रतिमान के प्रयोग से अध्यापक अपने विद्यार्थियों के व्यवहारों का अध्ययन कर सकता है, समझ सकता है और उनमें वांछित सुधार लाने का प्रयास कर सकता है। उसे विषय-वस्तु के साथ-साथ व्यवहार, अध्ययन और व्यवहार सुधार की प्रणालियों का ज्ञान भी होना चाहिए। शिक्षण-प्रतिमान शिक्षक को इस क्षेत्र में समर्थ बनाता है।

संप्रत्यय संप्राप्ति प्रतिमान (Concept Attainment Model) का प्रयोग कर इस बात की पुष्टि दी जा सकती है कि विद्यालयों के कक्षा-कक्ष वातावरण में अन्य विषयों की तरह संस्कृत भाषा के शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति भी की जा सकती है। इस प्रतिमान का प्रयोग कर विद्यार्थियों में संस्कृत व्याकरण के संप्रत्ययों को सरलतापूर्वक उपलब्ध कराया जा सकता है।

संप्रत्यय संप्राप्ति प्रतिमान का विकास जे.एस. ब्रूनर द्वारा किया गया था। इस प्रतिमान का प्रयोग कर शिक्षक, विद्यार्थियों को संप्रत्यय की प्रकृति की सही जानकारी प्रदान करता है। यह एक आगमनात्मक विधि है। संप्रत्यय संप्राप्ति प्रतिमान के तत्व —

1. **उद्देश्य** — इस प्रतिमान का प्रयोग भाषा का बोध तथा कौशल का विकास करना है। आगमन तर्क के लिए इस प्रतिमान का मुख्यतः विकास किया जाता है।
2. **संरचना** — इस प्रतिमान की संरचना तीन चरणों में पूर्ण होती है जो अग्रलिखित है —
   (i) प्रस्तुतिकरण एवं संप्रत्यय परिचय
      (क) सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा नियोजित क्रम के 'हाँ' अथवा 'ना' लेबल लगाकर विभिन्न उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं, जैसे — विद्यार्थियों को यदि 'स्वर संधि' पढ़ाना हो तो जितने स्वर संधि के उदाहरण होंगे उसमें 'हाँ' का लेबल तथा उससे भिन्न उदाहरणों में 'ना' का लेबल लगा होगा।

हाँ (YES)	**ना (NO)**
नरेन्द्रः= नर+इन्द्रः	वागीशः=वाक्+ईशः
गणेशः= गण+ईशः	षड्दर्शनम्=षट्+दर्शनम्
हिमालयः=हिम+आलयः	तस्याश्च=तस्याः+च
सूक्ति= सु+उक्ति	प्रातस्तत्र=प्रातः+तत्र

(ख) विद्यार्थी, उन सकारात्मक उदाहरणों की नकारात्मक उदाहरणों से तुलना करते हैं।

(ग) इस आधार पर विद्यार्थी परिकल्पना का निर्माण करते हैं।

(घ) विद्यार्थी, सकारात्मक उदाहरणों को समझकर 'संप्रत्यय' की पहचान कर सकेंगे तथा उसे परिभाषित करेंगे।

(ii) संप्रत्ययों का परीक्षण

(क) संप्रत्यय से संबंधित बिना लेबल के अन्य उदारहण प्रस्तुत कर, विद्यार्थियों से 'हाँ' अथवा 'ना' में उत्तर प्राप्त करना। (अन्य उदाहरणों को दिखाकर विद्यार्थियों से कहना कि उन्होंने जिस संप्रत्यय को पहचाना है उससे संबंधित उदाहरणों को पहचानें)

अन्य उदाहरण
भूमीशः= भूमि+ईशः
दिग्गजः= दिक्+गजः
महेन्द्रः= महा+इन्द्रः
रमेशः= रमा+ईशः
जगदीशः= जगत्+ईशः
एकोविचित्रः= एकः+विचित्रः

(ख) शिक्षक 'संप्रत्यय' की परिभाषा देकर उसके नियमों के विषय में बताते हैं (स्वर संधि की परिभाषा एवं उसके नियमों को बताएँगे)।

(ग) विद्यार्थी उस संप्रत्यय संबंधी उदाहरण देंगे।

(iii) चिंतन व्यूह रचनाओं का विश्लेषण

(क) इस अंतिम चरण में विद्यार्थी संप्रत्यय (स्वर संधि) से संबंधित विचारों का वर्णन करेंगे।

(ख) परिकल्पना एवं गुणों का महत्व बताएँगे।

(ग) विद्यार्थी संप्रत्ययों का अभ्यास करेंगे।

3. **सामाजिक प्रणाली**—इस प्रतिमान के प्रारंभ में शिक्षक विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करता है तथा सहायता देता है। शिक्षक का लक्ष्य रहता है कि वह विद्यार्थियों को ऐसी दशा प्रदान करे जिससे वे प्रत्ययों का विश्लेषण कर सकें।

4. **सहायक प्रणाली**—इस प्रतिमान में शिक्षक पाठ्यवस्तु में इस प्रकार की स्थिति का निर्माण करता है जिससे प्रत्ययों का बोध हो सके।

इस प्रकार उपर्युक्त प्रतिमान का प्रयोग कर संस्कृत व्याकरण में शैक्षिक वातावरण को रुचिकर बनाया जा सकता है। इस प्रतिमान की उपयोगिता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। विश्व के प्रत्येक देश की शैक्षिक संस्थाओं में साधनों की उपलब्धता के अनुसार इसके भरपूर प्रयोग के प्रयास किए जा रहे हैं। संस्कृत व्याकरण शिक्षण में भी इसका प्रयोग किया जा रहा है तथा शिक्षण को प्रभावशाली बनाया जा रहा है।

शैक्षिक तकनीकी शिक्षक को शिक्षण उपागमों, शिक्षण व्यूह-रचनाओं तथा शिक्षण विधियों के विषय में वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक ज्ञान प्रदान करती है। संस्कृत भाषा शिक्षण में किस समय, किस प्रकरण को स्पष्ट करने के लिए कौन-सी श्रव्य-दृश्य सामग्री का प्रयोग किया जाए, रेडियो, टेलीविज़न का उपयोग कर किस प्रकार रेडियो विज़न तथा कैसेट

विज्ञन का प्रयोग किया जाए तथा विद्यार्थियों को अपने सीखने की गति के अनुसार अध्ययन करने के लिए कैसे अभिक्रमित अध्ययन सामग्री तैयार की जाए— इन सबकी जानकारी शिक्षक को शैक्षिक तकनीकी के माध्यम से ही पता चलती है।

निष्कर्ष

विद्यार्थियों में व्यावहारिक परिवर्तन ही शिक्षण का मुख्य उद्देश्य है। व्यावहारिक परिवर्तन हेतु शिक्षक कक्षा वातावरण को समुचित बनाने का प्रयत्न करते हैं। यदि बालक विषयों से संबंधित संप्रत्ययों को विकसित नहीं करता है, तो उसे दी जाने वाली शिक्षा से उतना लाभ नहीं हो सकता है जितना होना चाहिए। शिक्षण-प्रतिमान शिक्षक को सीखने की प्रभावपूर्ण विधियों तथा सिद्धांतों का ज्ञान प्रदान करता है, सीखी हुई विषय-वस्तु को स्थायी करने की विभिन्न प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है और विद्यार्थियों में सीखने के प्रति प्रेरणा जाग्रत करने में तथा उनकी रुचि बनाए रखने में सहायता करता है।

शिक्षण-प्रतिमान उचित शिक्षण युक्तियों व साधनों का पता लगाता है और शिक्षक को उचित शिक्षण-अधिगम सामग्री व साधनों की संरचना, कार्यप्रणाली व प्रयोग की जानकारी कराता है। इन प्रतिमानों के माध्यम से अधिगम मनोविज्ञान के विकास द्वारा बच्चों की व्यक्तिगत भिन्नता का पता लगता है। इसकी सहायता से शिक्षक विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं के आधार पर शिक्षण प्रक्रिया का नियोजन करता है और पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति में सफलता प्राप्त करता है।

कक्षा-कक्ष वातावरण में यदि संस्कृत व्याकरण को सामान्य विधि द्वारा पढ़ाया जाए तो व्याकरण शिक्षण के सभी उद्देश्यों को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। यदि शिक्षक संस्कृत व्याकरण को पढ़ाते समय शैक्षिक वातावरण को रुचिपूर्ण एवं रचनात्मक बनाते हैं तो विद्यार्थी कक्षा में अधिक सतर्क तथा योगदान दे पाएँगे। उनके लिए विषय को समझना अधिक सरल हो जाता है।

विद्यालयों में विद्यार्थी संस्कृत विषय के प्रति अधिक रुचि नहीं रखते हैं। यदि संस्कृत व्याकरण को संप्रत्यय संप्राप्ति प्रतिमान की संरचना के आधार पर पढ़ाया जाए तो विद्यार्थी संस्कृत विषय के प्रति अधिक सजग होंगे। इस प्रकार संस्कृत व्याकरण शिक्षण में इस प्रतिमान का प्रयोग कर शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है तथा शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली भी बनाया जा सकता है।

संदर्भ

अग्रवाल, जे.सी. और एस. गुप्ता. 2010. *शैक्षिक तकनीकी*. शिप्रा पब्लिकेशंस, नयी दिल्ली.

कुलश्रेष्ठ, एस. पी. 2002. *शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार*. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.

चौधरी, नन्द किशोर और रिद्धि चन्द गुप्ता. 2010. *शिक्षण अधिगम प्रक्रिया*. हिन्द पब्लिशर्स, लुधियाना.

भन्साली, आशा. 2008. *संस्कृत शिक्षण के नवीन आयाम*. राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर.

मंगल, एस.के. और उषा मंगल. 2013. *शिक्षा तकनीकी*. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.